International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 19-01-2020; Accepted: 20-02-2020; Published: 14-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 42-43

हरिऔध सिंह उपाध्याय की रचनाओं में नारी विषयक चिन्तन

निहारिका यादव [1], माधुरी यादव [2]

[1, 2] ए.पी.सेन. डिग्री कॉलेज चारबाग लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

हरिऔध जी द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि एवं गद्य लेखक थे। ये पहले ब्रज भाषा में कविता किया करते थे। आचार्य महावीर प्रसाद जी के प्रसाद से उन्हे खड़ी बोली काव्य की रचना करने की प्रेरणा मिली। हिन्दी साहित्य को अपनी प्रतिभा का अमूल्य योगदान दिया। हरिऔध ने अपनी रचनाओं में नारी का जो रुप चित्रित किया है वह हिन्दी साहित्य जगत् के लिए एक नवीन मार्ग प्रस्तुत करती है, उनकी रचनाओं में जैसा नारी विषयक चिन्तन, मनोदशाओं का विषद एवं मार्मिक किया है। वैसा चित्रण बहुत कम देखने को मिलता है।उनका चरित्र इस प्रकार है कि समाज में निर्बल, असहारा बनकर उच्च आदर्शो की ओर प्रतिष्ठित किया है, वह हरिऔध जी की किसी भी रचना में स्पष्ट रुप से परिलक्षित होता है। हरिऔध जी ने नारी पात्रों के चित्राकंन में असाधारण कौशल का परिचय दिया है। उन्होंने ब्रज और खड़ी बोली में रचनाए की हैँ रसकलश कवि की ब्रज भाषा में रचित काव्य है,इसमें कवि ने अश्लीलता का निवारण करते हुए उसकी रसराज उपाधि को अक्षुण्य बनायें रखने की चेष्टा की है तथा सभी रसों का सोदाहरण मार्मिक विवेचन किया है। कवि ने इस ग्रंथ में नवीन ढंग से नायिका भेद भी उपस्थित किया है। यगां कवि न उत्तम नायिका के आठ भेद किए है। पति-प्रेमिका परिवार प्रेमिका जाति प्रेमिका देश प्रेमिका,जन्मभूमि प्रेमिका निजता-अनुरागिनी, लोकसेविका और धर्म प्रेमिका यह वर्गीकरण करके उक्त नायिकाओं के स्वभाव चेष्टा व्यापार, कार्य- प्रणाली आदि का अत्यन्त सजीवता के साथ चित्रित किया है।1

प्रियप्रवास हरिऔध जी का प्रसिद्ध महाकाव्य है प्रियप्रवास में वांछित नारी सुलभ चरित जितना हृदयग्राही मर्मश्पर्शी एवं स्वाभाविक है इतना समाजोपरक चरित्र भी प्रियप्रवास में राधा का विरह वर्णन लोक मंगल में परिवर्तित हो जाता है। राधा इतनी अधिक लोककल्याण में मग्न हो जाती है कि कृष्ण की स्मृति केवल प्रेरणायें ग्रहण करने के लिए ही करती है। इसी तरह उनका व योग व्यक्तिगत न होकर समष्टिगत है। वह विरह में इधर-उधर बौराई सी नही घूमती बल्कि जन सेवा करती हैं, और विरह के धिक उदीप्त होने पर केवल यही कामना करती है कि यदि वह पक्षी होती तो उड़कर प्रिय की चरणरज ले आती।

पाई जाती दुखित जितनी अन्य गोपांगनाएं।
राधा द्वारा सुरिक्त कर भी थी यथा रीति होती।।
गा के लीला स्वप्रियतम की वेणु वीणा बजाके।
प्यारी बातें कथन करके वे उन्हें बोध देती।।2

राधा जी ब्रजजनों की पीड़ा दूर करने का निश्चय करके गेह में आराम से बैठती नही पुतु जब वह सुनती है कि कोई गोपी कहीं व्यथित होकर मूर्छित पड़ी है तो तुरन्त उसका उरचार करती है समझाती है। व्यथा के तीव्र वेग को कम करने के लिए नाना प्रकार की कथायें सुनाती है। नित्य यशोदा नंद के पास जाकर उन्हें सान्त्वना देती रहती है यदि कही गोप जनों को खिन्न बैठे देखती है तो उन्हें उद्योगी परिश्रमी एवं कर्मशील बनाने की प्रेरणा प्रदान करती है। राधा ने गोपियों का ऐसा दल तैयार किया था जो सारी ब्रजभूमि में सुख व शान्ति का प्रसार करता है इसी काण राधा दुष्ट ब्रजजनों की शासिका है कंगालो की परमविधि और पीड़ितो की औषदि स्वरुप हैं। दोनो की बहन और अनाथों की माता हैं विश्व की प्रेमिका है तथा समस्त ब्रजभूमि की आराध्या देवी बनी हुई है।

सच्चे स्नेही अवनिजन के देश के श्यामा।
राधा जैसी सदय हृदय विश्व प्रेमानुरक्ता।
हे विश्वत्मा भारत मुख के उनके में और।
ऐसी त्यागी विरह घटना किन्तु कोई न होवे ।।4

राधा जी अपने दित्य गुणों के कारण अधिक महान व श्रेष्ठ दिखाई पड़ती है। वह न तो जयदेव एवं विद्यापति की राधा की तरह काम वर्णों से विद्ध कर विलास कामना के अपूर्ण रह जाने पर व्यथित एवं बेचैन दिखायी पड़ती है और न ही सूर नंददास आदि कवियों की तरह हा हा कृष्ण की रट लगाये रहती है। वह न ही जायसी की विलासिनी नागमती की तरह अपने प्रियतम से मिलने के लिए प्रत्येक ऋतु में तड़पती हुई दिखायी दैती है। बल्कि हरिऔध गी विरहिणी राधा इन सबसे श्रेष्ठ विश्व प्रेम करुण लोक सेवा का उदात्त मूर्ति के रुप में दिखायी देती है राधा को नभ के तारे कुंजो के भ्रमर सरोवरो आदि में सृष्टि के प्रत्येक कण में अपने कृष्ण दिखाई देते हैं वह कृष्ण को विश्व में देखती वह प्राणीं मात्र की सेवा सुश्रुषा करती हुई अपना जीवन व्यतीत करने लगती है।5 प्रियप्रवास में यशोदा का हृदयविदारक और शोक सन्ताप स्वरुप भी प्रियप्रवास में प्राप्त होता है। उनके हृदय की व्यथा को देखकर सभी सहृदय शोकातुर रो जाते है मथुरा से नन्द द्वारा कृष्ण और बलिराम को छोड़कर अकेले लौटने पर यशोदा की जो दशा होती है उसका वर्णन शब्दो में कर पाना असम्भव है। यशोदा कृष्ण के लिए गायों शुक सारिका आदि पक्षियों को व्याकुलता दैखकर और भी व्यथित हो जाती है। और पूछती है-

प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहा है।
दुख जलधि विमग्ना का सहारी कहाँ है।

यशोदा जी का यह विलाप ममतामयी माँ के हृदय का सच्चा उद्गार है इन्ही गुणों के कारण वात्सल्य और करुणा की साकार मूर्ति के रुप में यशोदा जी प्रतिष्ठित है।6 अन्त में यशोदा की दिव्य एवं भव्य स्वरुप प्रिय प्रवास में उभरकर सामने आता है। चिर वियोग के कारण उनका शरीर जर्जर एवं क्षीण हो गया है परन्तु उनका अन्तःकरण विशाल है उसमें संकीर्णता के स्थान पर उदारता ने स्थान बना लिया है। पहले उन्हे अपने प्रिय पुत्र कृष्ण का वियोग आनहत था। परन्तु उद्धव के साथ वार्तालाप के समय यशोदा कृष्ण के शौर्य और वीरता की प्रशंसा करती हुई उनका यशगान करती है और हर्षित होती है तथा दुखिया देवकी के बंधन मुक्त होने पर आनन्दित होती है वासुदेव देवकी कारगार के दुखों का स्मरण कर वे आँसू बहाती हैं। इन क्षणों में यशोदा को मात्र इस बात की पीड़ा है कि अब उनका लाडला पुत्र दुसरो का प्यारा बनता जा रहा है परन्तु उसके बाद भी उनका व्यापक हृदय यह नही चाहता है कि वह देवकी के हृदय के टुकड़े को बुलाकर अपने पास रखे अब उनकी यही एकमात्र कामना है. मैं रोती हूँ हृदय अपना कुटती हूँ सदा ही। हा ऐसी ही व्यथित अब क्यों देवकी को करुँगी प्यारे जीवे पुलकित रहे और बने भी उन्ही के। थाई नाते बदन दिखला एकदा और देवे।।7 यशोदा जी वात्सल्य की साकार

मूर्ति है आज उस वृक्ष की एक मात्र लकुटि रथपर बैठकर जा रहा है वह अपने पति नंद जी कह रही है। मेरे पुत्र को रास्ते में किसी चीज का कष्ट न हो यह कभी यात्रा पर नही गया है अतः इसका ध्यान रखना इसे मुख लगने पर नाना पर्कार के व्यंजन व फल खिला देना प्यास लगने पर मधुर जल पिला देना उसका हर प्रकार का ख्याल रखना। इस प्रकार वात्सल्य से जननी का हृदय दुलार व प्रयार से भरा है जिस देखकर वात्सल्य की मंगलमयी मूर्ति आँखों के सामने साकार रुप से अंकित है।

अधखिला फूल समृद्ध और जमींदारो की रुप लोतुपता एवं लम्पटता को लक्ष्य करके लिखा गया है देवनगर का निवासी हरि मोहन पांडे की पत्नी पार्वती पुत्र देवकिशोर तथा पुत्री देवहूति अपनी पैतृक सम्पत्ति गवाँकर वंशनगर में जाकर बस जाते है वंशनगर का जमींदार कामिनी मोहन की रुप लोलुप दृष्टि देवहूति पर पड़ जाती है। और वह उसे पाने के लिए अनेक प्रकार के हथकण्डे अपनाता है देवहूति विवाहिता थी , किन्तु उसके पति उसे भ्रमवश मृत समझकर साधु हो गये थे। अपने सतीत्व पर दृढ़ रहकर देवहूति कामिनी मोहन से अपनी रक्षा करती रहती किन्तु एक दिन उसके चंगुल में पड़ जाती है। ठीक उसी समय पगुँच कर देवस्वरुप नामक एक साधु उसकी रक्षा करके उसके घर पहुँचा देता है। पार्वती दैवस्वरुप के रुप में अपने दामाद को पहचान लेती है। और वियुक्त पति-पत्नी का नाटकीय ढ़ग से मिलन होता । इधर लम्पट कामिनी मोहन घोड़े से गिर जाता है । मृत्यु के पूर्व वह अपनी आधी सम्पत्ति देवहूति के नाम लिख जाता है । लेकिन देवहूति और उसके पति इस सम्पति का उपयोग न करके परमार्थ में उसे लगा देते है ।8

वैदेहीवनवास जानकी जी की मुख्य भूमिका में है उनके आदर्श युक्त उदात्त चरित्र त्यागमय जीवन और लोकाराधन में राम की सहयोगिनी के रुप को अंकित किया है। नव जागरण की दिशा एक विशेष बात भारत की नारी को जगाना भी था । हरिऔध के प्रियप्रवास की सीता के वनवास पर राम के ऊपर एक आक्षेप होता था कि उनका यह कार्या सीता के प्रति स्त्री के प्रति अन्याय और अविवेकपूर्ण था। वैदेहीवनवास की वैदेही भारतीय हिन्दू नारी प्रतीक्षाक है वे एक आद्रश महिला है। इसमें नारी की कोमल हृदय वाली असीम कोमलता का दर्शन होता सीता यह चाहती है संसार में सर्वत्र शान्ति नही रहे कही भी अहित घटनाएं न घंटे । सारा विश्व शान्ति पूर्वक जीवनयापन करें। वैदेहीवनवास का समापन भी कवि ने पौराणिक अलौकिक प्रसंग के स्थान पर स्वाभाविक घटना के रुप दिया है। पूरी कथा में हरिऔध जी ने व्यवहारिक तक का सहारा लिया है उस समय की प्रथा तथा व्यक्ति प्रेम एवं लोक प्रतिष्ठा के बीच एक मार्ग निकाल कर राम को भी दोषमुक्त करने का प्रयास किया है। साथ ही उन्होने सीता में उच्चतर मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा करके उन्हे एक त्यागमयी आद्रश नारी और योग्य माँ के रुप में प्रतिष्ठित करने का कार्य किया है ।

ठेठ हिन्दी के ठाठ उपन्यास में ऐसे दो प्रेमियों का प्रेम वर्णित है। जिनका सामाजिक कुरीतियों के कारण सम्बन्ध नही हो पाता दोनो प्रेमी विवाह सूत्र में तो नही बंध पाते उनका सच्चा स्नेह बना रहता है । लेखक ने प्रेमी के निस्वार्थ और त्यागमय प्रेम का उच्च आदर्श प्रदर्शित किया है इस उपन्यास में पुरुप, नारी और प्रकृति की और किस प्रकार लेखक की दृष्टि उन्मुख हो रही है इसका सुंदर संकेत मिलता है।9

निष्कर्ष

प्राचीनकाल से ही संवेदना के स्तर पर नारी अपमानित , शोषित और तिरस्कृत जीवन बिताने वाली परिस्थियाँ ही समाज से मिला है हरिऔध जी ने उस मिथक को तोड़ा है। हरिऔध ने अपनी रचनाओं में नारी पात्रों के चरित्र में नवीन उद्भावनाएं अभिव्यक्त की है।कवि हरिऔध स्त्री के अनेक पहलुओं को प्रकट करने की सफल कोशिश की है उनकी रचनाओं की नारी पात्र सजग, सशक्त, उच्च आदर्श प्रस्तुत करने वाली है । वह समाज में व्याप्त बुराई से लड़ने की अद्भुत क्षमता रखती है ।वह समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुरीतियों का शिकार नही होती अपितु समाज को अपनी सेवा देकर समाज को नवीन दशा और दिशा प्रदान करने में पूर्णतः सफल है। जीवन की अभाव ग्रस्तता, बेबसी और शोषण प्रक्रिया से कवि अच्छी तरह वाकिफ है। जबकि अधिकतर पुरुष रचनाकार जब लिखते हैं तो उनकी लेखनी से उतरती स्त्री या तो दया की पात्र होती है जिसकी उपस्थिति को लेकर जितना शोक मनाया जाय कम है या फिर ऐसी ही होती हैं एक स्त्री को चूल्हे –चौके की दुनिया तक न रखकर कवि ने प्रतीकात्मक रुप में उसकी विराटता का संदेश दिया है सृष्टि रचना के तमाम गूढ़ अर्थ और अभिप्राय जैसे स्त्री के सरोकारो में मूर्त है उठे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरिऔध के काव्य में राष्ट्रीयता एवं सामाजिकता, डॉ. मंजु तरडेजा, पृ.51, विद्या प्रकाशन,कानपुर, प्रथम संस्करण 2012.
2. हरिऔध के महाकाव्यों में नारी पात्र,रेनू श्रीवास्तव , पृ.42, विकाश प्रकाशन कानपुर, प्रथन संस्करण 2012.
3. वही, पृ.41.
4. हिन्दी कृष्णकाव्य में प्रियप्रवास, डॉ.सुरेश पति त्रिपाठी, पृ.152, अलका प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1994.
5. वही, पृ.152-53.
6. अयोध्या सिंह उपाध्याय , डॉ. कन्हैया सिंह, पृ.88, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, प्रथम संस्करण 2012.
7. वही, पृ.55.
8. हरिऔध के कावेय में राष्ट्रीयता एवं सामाजिकता, डॉ.मंजु तरडेजा, पृ.54, विद्या प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण 2012.
9ण अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, डॉ.कन्हैया सिंह, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, प्रथम संस्करण 2012.